P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-2* (Part-1) October- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

महादेवी और रवीन्द्रनाथ : स्त्री – दृष्टि

अंजू सिंह
शोध छात्रा,
हिंदी विभाग,
खान्द्रा कॉलेज,
खान्द्रा

सारांश

महादेवी और रवीन्द्रनाथ दोनों के काव्य में नारी को अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हैं। हमारी परंपरा में नारी उपेक्षित रही हैं दोनों के लिए यह बात असह्य थी। इसलिए दोनों ने नारियों की दुर्गति के कारणों की पहचान कर उसे परंपरा की बेड़ियों से मुक्ति दिलाने का प्रयत्न किया हैं। इसलिए दोनों की नारी–दृष्टियों में समानताएँ अधिक हैं और दोनों इसके उज्जवल भविष्य के आकांक्षी रहे हैं।

मुख्य शब्द : धैर्यशीलता, संकल्पशीलता, साहचर्य, प्रेमसौन्दर्य, निर्भयता।

प्रस्तावना

आधुनिक काल में नवजागरण का उन्मेष हुआ। द्विवेदी युग तक आते–आते जागरण–सुधार की आकांक्षा प्रबल हो गई थी। स्त्री के प्रति मध्यकालीन–दृष्टिकोण में काफी बदलाव आ चुका था। रवीन्द्रनाथ तत्कालीन भारतवर्ष के ऐसे कवि थे जो विभिन्न साहित्यिक उपलब्धियों के आधार पर कविगुरु के रूप में ख्यात हो गये थे। विदित है कि उनका एक निबंध 'काव्य उपेक्षिता' प्रकाशित हो चुका था। युग नियंता महावीर प्रसाद द्विवेदी ने इससे प्रेरित होकर एक निबंध लिखा था जिसका शीर्षक है 'कवियों की उर्मिला विषयक उदासीनता'। अर्थात इसी युग में नारियों के प्रति रचनाकारों के – दृष्टिकोण में काफी सुधार आ चुका था।

हिंदी छायावादियो में महादेवी वर्मा ऐसी कवयित्री थी जिन्होंने अपनी रचनाओं में स्त्रीवादी – दृष्टिकोण को काफी विस्तार दिया है। जाहिर है महादेवी वर्मा से रवीन्द्रनाथ की कई बार मुलाकात हुई हैं और उनकी रचनाओं से न केवल महादेवी परिचित थी बल्कि प्रेरित भी थी। महादेवी की जीवन यात्रा 1907 से 1987 तक है। रवीन्द्रनाथ ठाकुर का आविर्भाव समय है 1861 और 1941 में वे दिवंगत हुए। बड़े रचनाकारों में कभी–कभार समानांतर परिवेश में काफी रचनागत समानताएँ पाई जाती हैं और रचना संसार तथा वैयक्तिक संस्कार के चलते–दृष्टिकोण में काफी अन्तर भी।

पुरुष–प्रधान समाज के लम्बे इतिहास में स्त्री की असीम धैर्यशीलता का दुरूपयोग करके पुरुषों ने इसका लाभ उठाया। स्त्री की इसी संयमशीलता एवं धैर्यशीलता जहाँ उसके दुःख का कारण बनी वही दूसरी ओर स्त्री की यह प्रवृत्ति उसकी शक्ति एवं सुदृढ़ता का प्रमाण भी स्त्री में संयम की आश्चर्यजनक शक्ति है, उसकी सहनशीलता कभी–कभी मनुष्य की क्षमता की सीमा से परे जान पड़ती है। महादेवी का यह गीत इसका अच्छा उदाहरण है –

"मै नीर भरी दुख की बदली।
स्पंदन में चिर निस्पंदन बसा, क्रंदन में आहत विश्व हँसा'
नयनों में दीपक से जलते'पलकों में निर्झरणी मचली।"[1]

(सांध्य गीत)

महादेवी के इस गीत में स्त्री के स्वभाव की दुर्बलता और सुदृढ़ता जैसी परस्पर विरोधी प्रवृतियों का सुंदर समन्वय दिखाया गया है। दुख के कारण स्त्री की आँखों में आंसू भरे हुए है,परन्तु ये गिरते नहीं है। वह रोने वाली है, पर रोती नहीं है। कठोर प्रयास के साथ आँसू रोकती है, क्योंकि वह दुख से हार नहीं मानती। उसकी आँखों में आँसू हैं परन्तु नयनों में दीपक–सी आग जलती रहती हैं। यह आग आक्रोश की भी है और संकल्पशीलता की भी है। महादेवी स्वयं समाजिक बंधनों को स्त्री के विकास में बाधक मानती हैं। चूँकि वह भी समाज का आधा हिस्सा है,अतः उसकी उपेक्षा के प्रति सचेत करते हुए लिखती हैं –"जो देश के भावी नागरिकों की विधाता हैं, उनकी प्रथम और परम गुरु हैं जो जन्मभर अपने आपको मिटाकर, दूसरों को बनाती रहती हैं वे केवल तभी तक आदरहीन मातृत्व तथा अधिकार शून्य पत्नीत्व स्वीकार करती रह सकेगी, जब तक उन्हें अपनी शक्तियों का बोध नहीं होता। बोध होने पर वे बंदिनी बनाने वाली श्रृंखलाओं को स्वयं तोड़ सकेगी।"[2]

दूसरी ओर कविगुरु रवीन्द्रनाथ के लिए नारी भोग की वस्तु नहीं वरन प्रेरणा रूपी प्रेम की अमृतधारा है। नारी के बाह्य सौंदर्य की अपेक्षा आतंरिक सौंदर्य उन्हें अधिक प्रिय है। नारी–प्रेम को पाकर कवि अपने को धन्य मानते हैं। उन्होंने कहा था, "एक बात मैं अभिमानपूर्वक कह सकता हूँ कि मैंने आज तक किसी भी नारी के प्रेम को अवज्ञा की दृष्टि से नहीं देखा हैं, चाहे उसने किसी भी भाव से मुझसे क्यों न प्रेम किया हो। अपितु उसके लिए मैं हमेशा अपने आप को उसका कृतज्ञ अनुभव करता हूँ, कारण नारी–प्रेम को चाहे वह किसी रूप में क्यों न हो मैं उपकार के रूप में अनुभव करता हूँ।"[3] 'अनंत प्रेम 'कविता में कवि रवीन्द्र ने बार–बार शत–शत रूपों में नारी से ही प्रेम किया हैं, यह प्रणय भाव ही उनकी कविता का उत्स हैं। उदाहरण –

"तोमारेई येन भालोवासियाछि शत रुपे शतबार,
जनमें जनमें युगे युगे अनिवार।"[4]

नारी के रूप में उसके आदर्शो को कवि चाहते हैं। कवि ने सौभाग्य मानकर नारी के साहचर्य को आजन्म कि साधना का फल स्वीकार किया है। उनके हृदय में नारी सौन्दर्य से बंधा हुआ एकनिष्ठ प्रेमी का निवास है जो प्रेम की अमृतधारा में बहकर भी संतुष्ट नहीं है। 'कवि – कहिनी' के द्वितीय–सर्ग में कवि के प्रणय की लालसा, नारी के समक्ष उनका अनुरोध एवं समर्पण भाव व्यक्त हुआ हैं।

"बालिकार काछे गिया कातरे कहिल कवि,
आरो दाओ भालोबासा हृदये ढालिया,
आमि जत भालोबासी, तत दाओ भालोबासा,
नहिले गो पुरिबे ना प्राणेर शून्यता।"[5]

ये पंक्तियाँ, कवि के नारी प्रेम भाव का उत्कृष्ट रूप हैं। जिसमे वासना से बढ़कर समर्पण में आबद्ध होकर कवि ने नारी के बाह्य रूप के आकर्षण का सजीव चित्रण किया हैं। उर्वशी, चित्रा,रमणी, मानसी में अनुपम प्रेम–सौन्दर्य की अभिव्यक्ति हुई हैं। इसका एक अच्छा उदाहरण चौताली काव्य संग्रह में संगृहीत 'मानसी' कविता में मिलता है –

"सुधु विधातार सृष्टि नह तुमि नारी।
पुरुष गड़ेछे तोरे सौन्दर्य संचारी,
आपन अंतर हते, बसि कविगण
सोनार उपमासुत्रे बुनिछे बसन।
सोंपिया तोमार, परे नूतन महिमा
अमर करिछे शिल्पी तोमार प्रतिमा,
अर्धेक मानवी तुमि अर्धेक कल्पना।"6

साहित्यकार की जीवन–दृष्टि और उसका व्यक्तित्व ज्ञात या अज्ञात रूप से उसके साहित्य पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष प्रभाव डालता है। महादेवी की कविता स्त्री को जागरण की ओर प्रेरित करती हैं, स्त्री की शक्ति की संभावना की ओर संकेत करती हैं। ये कविताएँ इसका उदाहरण है –

"कर व्यथाएँ, सुख–कथाएँ,
तोड़ सीमा की प्रथाएँ,
प्रात के अभिषेक को हर दृग सजाती आ।"[7]
(दीपशिखा)

महादेवी अपने गीतों में 'मैं' के जरिये एक स्त्री के रूप में अपनी भावना व्यक्त करती हैं और यह अधिकांशतः परोक्ष रूप में की जाती है। उनके गीतों में वेदना के गहरे अंधकार में भी आशा की किरणें सदा दिखाई देती हैं। उदाहरण –

सब बुझे दीपक जला लूँ।
घिर रहा तम आज दीपक–
रागिनी अपनी जगा लूँ।"[8]
(दीपशिखा)

महादेवी निराशा और अज्ञानता के अंधकार खोई हुई स्त्रियों को अप्रत्यक्ष रूप से प्रोत्साहित करती हैं। उनके गीतों में वैयक्तिकता की प्रधानता के कारण 'मैं ' शब्द बार – बार सुनाई देती हैं। जैसे –

" मधुर – मधुर मेरे दीपक जल।"[9]
" प्रिय सांध्य गगन मेरा जीवन।"[10]
" झिलमिलाती रात मेरी।"[11]
" फिर विकल हैं प्राण मेरे।

तोड़ दो यह क्षितिज मैं भी देख लूँ उस ओर क्या है।"[12]

'मैं' शब्द के साथ वैयक्तिकता प्रत्यक्ष रूप में आती है और यह महादेवी की अनुभूति की तीव्रता को प्रदर्शित करता है। संभवतः उनके गीतों में 'मैं 'संपूर्ण स्त्री जाति का प्रतिनिधित्व करने लगता हैं। सभी सताई हुई स्त्रियों की आत्मा के लिए 'मैं' आवाज उठाता हैं कि अपनी आत्मा की लौ को कभी न बुझने देना, निर्भय रहकर दृढ़–संकल्प के साथ अपनी आस्था संभालना। अगर महादेवी अपने गीत के माध्यम से स्त्रियों को निर्भय उड़ने की प्रेरणा देती हैं, तो उसमें वे उड़ने का तरीका ही नहीं बताती बल्कि स्वयं उड़ना सीखने के लिए प्रोत्साहित भी करती हैं।

कवि रविन्द्र ने नारी के सोंदर्य में जिस प्रेम की अनुभूति की है, उसमे संयोग श्रृंगार–रस के साथ–साथ नारी के आदर्श मूल्यों की भी व्याख्या निहित है। नारी समाज का एक विशिष्ट अंग है जो सेवा, समर्पण, करुणा एवं निश्छल प्रेम के द्वारा एक पशु को मनुष्य बना सकती है। उसके आभाव में समाज की कल्पना ही नहीं की जा सकती है। नारी के इस प्रेरणात्मक अस्तित्व की प्रतिष्ठा कविगुरु रवीन्द्र ने ' नगर लक्ष्मी ','नारीर दान ','बंगमाता ', 'जननी तोमार करुण चरण खानी ', आदि काव्य में की हैं। 'गीतांजलि 'कविता की इन पंक्तियों में नारी के जननी रूप के प्रति कवि की अपार श्रद्धा व्यक्त हुई हैं –

"तोमारे नामि हे सकल भुवनमाझे,
तोमारे नामि हे सकल जीवन काजे,
तनु मन धन करि निवेदन आजि।"[13]

मध्ययुग की नारी एक वासना पुतली मात्र थी, वह मायाविनी थी। महादेवी और रवीन्द्रनाथ जैसे कवियों ने नारी को भोग वस्तु की संकीर्ण मनोवृति से निकालकर उसे प्रेयसी, जननी, संघर्षशील नारी के रूप में, समाज में प्रतिष्ठित किया। यह परिवर्तन, उन प्राचीन रुढ़िग्रस्त परम्पराओं के विरूद्ध नई चेतना का उद्घोष था।

निष्कर्ष

रवीन्द्रनाथ और महादेवी अपने–अपने भाषाई क्षेत्र के निश्चय ही विशिष्ट नक्षत्र हैं। उनमें मानवीय चेतना

और चिंतन कूट–कूट कर भरी हैं। दोनों की कविताओं में नारी से संबद्ध चेतना और चिंतन दोनों के वैचारिक आदर्श और यथार्थ की वैचारिक भूमि पर स्थापित हैं। किन्तु इतना निश्चित है कि वह मध्यकालीन आदर्श नहीं है। कटु यर्थाथ के चित्रण में भी सकारात्मक रूप पाये जाते हैं। नारी के विविध रूप उसके आदर्शगत मूल्यों, पुरुषों के साथ उसके संबंध, परिवार समाज एवं राष्ट्र तथा वैश्विक स्तर पर नारी की भूमिका और महत्व दोनों की कविताओं में वि।मान हैं। यर्थाथ एवं कल्पना की मणिकांचन सृजनशीलता दोनों की सृजनशील प्रतिभा का परिचायक हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1 *महादेवी साहित्य–1, संपादक निर्मला जैन, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, तृतीय संस्करण – 2007, पृ० – 273*
2 *श्रृंखला की कड़ियाँ, महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2004, पृ० – 24*
3 *साहित्य और सौन्दर्यबोध, रामशंकर द्विवेदी, भावना प्रकाशन – 1990, पृ० – 236*
4 *रवीद्रनाथ ठाकुर, मानसी, विश्वभारती ग्रंथम विभाग, कोलकाता, 1418 बंगाब्द पुनर्मुद्रण, पृ० – 213*
5 *रवीन्द्रनाथ ठाकुर, कवि– कहिनी, विश्वभारती ग्रंथम विभाग, कोलकाता, 1408 बंगाब्द, पृ० – 21,22*
6 *रवीद्रनाथ ठाकुर, संचयिता, विश्वभारती ग्रंथम विभाग, कोलकाता, 1418 बंगाब्द पुनर्मुद्रण, पृ० – 285*
7 *महादेवी साहित्य–1, संपादक निर्मला जैन, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, तृतीय संस्करण– 2007, पृ० – 373*
8 *महादेवी साहित्य–1, संपादक निर्मला जैन, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, तृतीय संस्करण –2007, पृ० – 319*
9 *महादेवी साहित्य–1, संपादक निर्मला जैन, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, तृतीय संस्करण –2007, पृ० – 187*
10 *महादेवी साहित्य–1, संपादक निर्मला जैन, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, तृतीय संस्करण –2007, पृ० – 249*
11 *महादेवी साहित्य–1, संपादक निर्मला जैन, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, तृतीय संस्करण –2007, पृ० – 276*
12 *महादेवी साहित्य–1, संपादक निर्मला जैन, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, तृतीय संस्करण –2007, पृ० – 278*
13 *गीतांजलि,अनुवादक–रामेश्वर मिश्र, विश्वभारती ग्रंथन विभाग, कोलकाता, तृतीय संस्करण – 2007, पृ० – 52,53*